Copyright © - Shri Vedanta Civil Services Academy

मध्यप्रदेश का इतिहास एवं संस्कृति

प्राचीनकालीन संस्कृति –

- मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में स्थित **भीमबेटिका** एक मध्य पुरापाषाणकालीन स्थल है जिसकी खोज **वाकणकर** द्वारा की गई थी, यहां से **मानव चित्रकारी** के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए है।
- इसी प्रकार उज्जैन के निकट **कायथा नामक** स्थल से **ताम्रपाषाण कालीन** संस्कृति के प्रमाण मिले है, कायथा, **वराहमिहिर** की जन्मभूमि मानी जाती है। कायथा की खोज 1964 में वाकणकर ने की थी इसका उत्खनन एच.डी. सांकलिया ने किया था। **वराहमिहिर** गुप्तकाल के प्रमुख **खगोलशास्त्री** थे।
- होशंगाबाद जिले में स्थित **आदमगढ** से **पशुपालन** के प्राचीनतम साक्ष्य मिले है **नर्मदा घाटी** के **हथनोरा** से प्राचीनतम मानव कपाल के साक्ष्य मिले है।
- **16** महाजनपदों में स **2** महाजनपद **चेदि** और **उज्जैयनी (अवन्तिका)** मध्यप्रदेश में ही स्थित है, चेदि महाजनपद की स्थापना **महामेघवर्मन** ने की थी। यह बुन्देलखण्ड का क्षेत्र था जो उडीसा तक फैला था इसकी राजधानी शुक्तिमति थी यहां पर एक प्राचीन **महाभारतकालीन शासक शिशुपाल** का भी उल्लेख हुआ है।
- **उज्जैयनी** एक शक्तिशाली महाजनपद था, इसकी 2 राजधानियॉ – **उज्जैन** और **महेश्वर** थी ।
- **चण्डप्रघोत, अवन्ति** का सबसे शक्तिशाली राजा था, माना जाता है कि श्रीकृष्ण ने उज्जैन के **संदीपनी आश्रम** से ही शिक्षा प्राप्त की थी।

पूर्व मध्यकाल

1. **चंदेल वंश** –
   - **संस्थापक – नानुक्य चंदेल**
   - **राजधानी** – खजुराहो (खजुर वाहो) एवं महोबा

   चंदेल राजाओं ने खजुराहो में 950–1050 ई.पू. के बीच कुल **85 मन्दिरा** का निर्माण कराया था, किन्तु वर्तमान में केवल **25 मंदिर** ही शेष रह गए है जैसे – कंदरिया महादेव मंदिर, चर्तुभुज मंदिर, जिन्नाथ मंदिर, बौद्धनाथ मंदिर, चौसठयोगिनी मंदिर (यह भेडाघाट में भी स्थित है)।
2. **परमार वंश** –
   - **संस्थापक – उपेन्द्र कृष्णराज**
   - **राजधानी** – **माण्डू** (धार) और उज्जैन (राजाभोज ने बाद में **धार** नगरी को राजधानी बनवाया)
3. **कल्चुरि वंश** –
   - **संस्थापक – कोकल्य देव**
   - **राजधानी** – त्रिपुरी (जबलपुर)

   (**मध्यप्रदेश** में कांग्रेस का केवल एक अधिवेशन 1939 मे त्रिपुरी में हुआ था।)

प्रमुख तथ्य :

- **स्कन्दगुप्त** का एक अभिलेख **सूपिया अभिलेख** रीवा से प्राप्त हुआ है, जिसमें हूणों के आक्रमण का उल्लेख किया गया है।
- दतिया के गुर्जरा अभिलेख में **"अशोक"** का उल्लेख हुआ है, अशोक का एक अन्य अभिलेख जबलपुर के निकट **रूपनाथ** से प्राप्त हुआ है।
- विदिशा का पुराना नाम **बेसनगर** या **ग्यारसपुर** है इसे **भिलसा** भी कहा जाता था, यह **शुंगो** की राजधानी रही थी।
- अशोक ने रायसेन जिले में **सॉची के स्तूप** का निर्माण कराया था और **पुष्यमित्र शुंग** ने इसकी रेलिंग (railing) बनवाई थी, इस स्तूप म बौद्ध भिक्षु, शारीपुत्र व महामोधग्लायन के अस्थि अवशेष सुरक्षित है।

Copyright © - Shri Vedanta Civil Services Academy

मध्यकालीन मध्यप्रदेश

1. *बुंदेला वंश* – संस्थापक – सोहन पाल

1531 में **रूद्रप्रताप बुन्देला** ने **ओरछा (टीकमगढ़)** को अपनी राजधानी बनाया था। टीकमगढ़ (ओरछा) **वीरसिंह बुन्देला**, जहॉगीर का मित्र था जिसने अबुल फजल की हत्या की थी। **छत्रसाल** इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था। **भूषण कवि**, छत्रसाल के दरबारी कवि थे।

2. *बघेला वंश* – संस्थापक – व्याघ्रराज, क्षेत्र – रीवा

बघेला शासक रामचन्द्र के दरबार में ही प्रसिद्ध संगीतज्ञ **रामतनु पाण्डेय (तानसन)** रहा करते थे जिसे उन्होने **अकबर** को उपहार स्वरुप दे दिया था। रीवा की **गोविन्दगढ़** तहसील में ही पहली बार सफेद शेर (बाघ) देखा गया था जिसे बघेला **राजा गुलाब सिंह** ने रानी विक्टोरिया को उपहार में दे दिया था।

प्रारंभिक राजधानी बांधवगढ जो कि बाद में रीवा स्थानांतरित कर दी गई थी। 1857 के संघर्ष में बघेलों ने अंग्रेजों का साथ दिया था।

3. *सिंधिया वंश* – संस्थापक – रानोजी सिंधिया, **वास्तविक संस्थापक – महाद्जी सिंधिया**

प्रारंभिक राजधानी – उज्जैन

किन्तु 1810 में **दौलतराव सिंधिया** ने ग्वालियर को अपनी राजधानी बनाया था। **जीवाजीराव सिंधिया** ने **"मध्य भारत संघ"** से राजाओं का एक संघ बनाया था 1948 तक वे इस संघ के अध्यक्ष भी रहे।

4. *होल्कर वंश* – संस्थापक– मल्हार राव होल्कर

राजधानी– इन्दौर

अहिल्याबाई ने अपनी राजधानी इन्दौर से महेश्वर स्थानांतरित की थी। मल्हार राव होलकर के बाद **खाण्डेराव** अगला शासक बना, किन्तु खाण्डेराव की विधवा **अहिल्याबाई** इस वंश की सबसे महान शासिका थी।

Copyright © - Shri Vedanta Civil Services Academy

मध्यप्रदेश के प्रमुख राजवंश

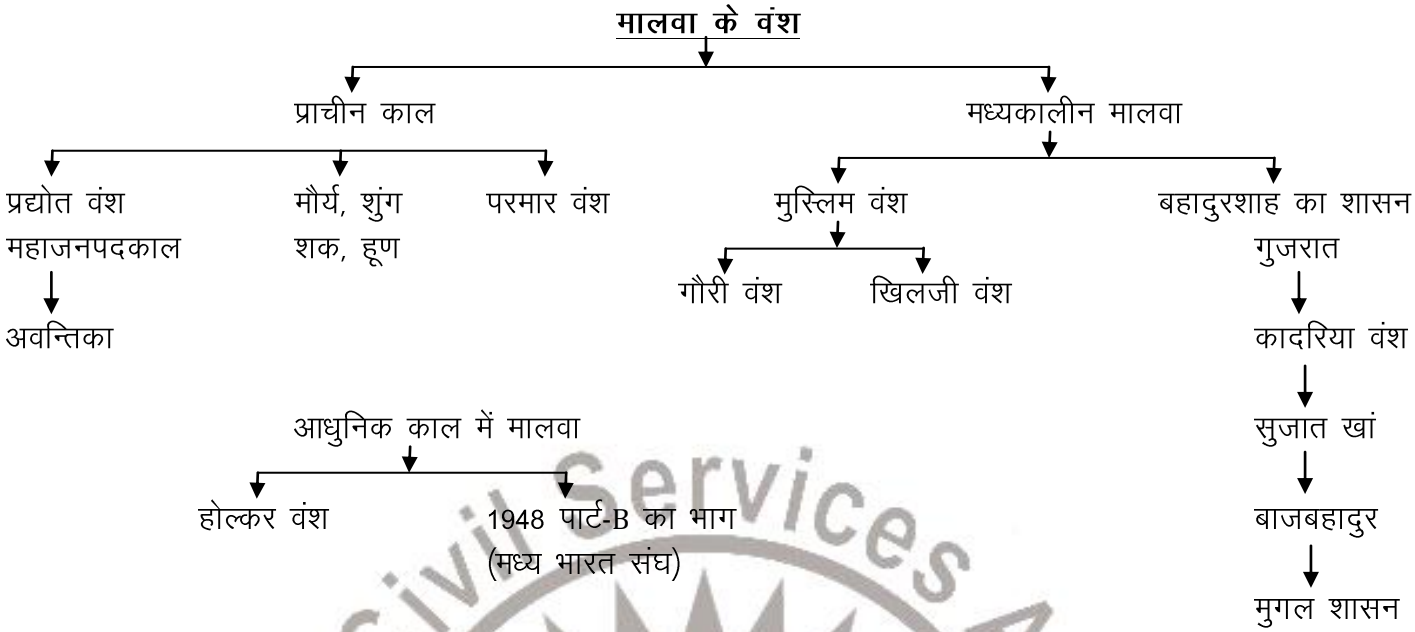

अवन्तिका महाजनपद

मध्ययुग में अवन्तिका महाजनपद की गणना एक शक्तिशाली महाजनपद के रूप में की जाती थी। विष्णुपुराण के अनुसार मगध के प्रथम वृहद्रथ वंश के अंतिम शासक रिंपूजय की हत्या उसके ही अमात्य पुलिक द्वारा कर दी गई थी और अवन्तिका के सभी क्षत्रियों ने उसका समर्थन भी किया। किन्तु वह स्वयं शासक नही बना बल्कि अपने पुत्र प्रद्योत को उसने अवन्तिका का पहला शासक नियुक्त किया।

प्रद्योत वंश – संस्थापक – प्रद्योत

जातक कथाओं में प्रद्योत को अपनी कठोर सैनिक नीतियों के कारण चण्डप्रद्योत कहा गया हैं उसके समय में सम्पूर्ण मालवा और पूर्व तथा दक्षिण के कुछ प्रदेश अवन्तिका राज्य के अधीन हो गये थे। यह आर्थिक दृष्टि से एक समृद्ध महाजनपद था और मुख्य रूप से लौह उद्योग के लिए जाना जाता था। उच्च कोटि के लोहे के हथियार होने के कारण ही एक लम्बे समय तक अवन्तिका ने मगध का विरोध किया था। चण्डप्रद्योत बुद्ध का समकालीन था और बुद्ध का कट्टर अनुयायी होने के कारण उसने बुद्ध को कई बार उज्जैनी आने के लिए आमंत्रित भी किया था किन्तु बुद्ध कभी अवन्ति नही आ सके थे।

चण्डप्रद्योत के मगध के राजा बिम्बिसार के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध थे और एक बार जब चण्डप्रद्योत पीलिया रोग से ग्रसित हो गया था तो बिम्बिसार ने अपने राजवैद्य जीवक को चण्डप्रद्योत के ईलाज के लिए उसके दरबार भेजा था, किन्तु बिम्बिसार के पुत्र अजातशत्रु से चण्डप्रद्योत के संबंध कठोर रहे। चण्डप्रद्योत के भय के चलते ही अजातशत्रु ने राजगृह के किले का दुर्गीकरण कराया था। चण्डप्रद्योत के वत्स के राजा उदयन से भी कटु संबंध रहे किन्तु बाद में चण्डप्रद्योत ने अपनी पुत्री वास्वदत्ता का विवाह उदयन के साथ करा दिया था और वत्स के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित कर लिये थे।

नोट – 1. गुप्तकाल में कुमार गुप्त एवं स्कन्दगुप्त–प्रथम के दरबारी कवि भास ने स्वप्न वास्वदत्ता नामक नाटक लिखा जो भारत का पहला पूर्ण नाटक है।

2. इसमें वत्स के राजा उदयन एवं वास्वदत्ता की प्रेमकथा है यद्यपि इसके पहले अश्वघोष द्वारा लिखित सारीपुत्र प्रकरण भारत का पहला अपूर्ण नाटक माना जाता है।

3. नाट्यशास्त्र के रचियता भरतमुनि माने गये हैं।

चण्डप्रद्योत ने लगभग 23 वर्षों तक शासन किया था और बाद में बौद्ध सन्त महाकच्चायन के प्रभाव में आकर उसने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था उसके समय उत्तरी अवन्तिका की राजधानी उज्जैनी तथा दक्षिण अवन्तिका

की राजधानी महिष्मति को राजधानी बनाया।

चण्डप्रद्योत की मृत्यु के बाद उसका पुत्र पालक अवन्तिका का शासक बना। पालक ने वत्स राज्य पर आक्रमण कर उसकी राजधानी कोशाम्बी पर अधिकार कर लिया था तथा अपने पुत्र विशाखयूप को वहा का उपराजा बनाया था। पालक ने भी 24 वर्षों तक शासन किया इसके बाद विशाखयूप ने 50 वर्ष, अजक ने 21 वर्ष और नन्दिवर्धन ने 20 वर्षों तक शासन किया नन्दिवर्धन के समय शिशुनाग वंश के शिशुनाग ने अवन्तिका को जीतकर मगध साम्राज्य में शामिल कर लिया था।

शिशुनाग वंश के पश्चात् उज्जैनी पर नंद वंश के शासकों का शासन रहा। नंद वंश के उपरान्त यहां मौर्य वंश ने शासन किया बिन्दुसार ने अपने पुत्र अशोक को उज्जैनी का राज्यपाल नियुक्त किया था। शुंगकाल के एक शासक भागभद्र के समय तक्षशिला के ग्रीक शासन एण्टियालकिडस ने अपने राजदूत हेलियोडोरस को शुंगों की राजधानी विदिशा भेजा था और हेलियोडोरस ने बेसनगर, विदिशा में विष्णुमंदिर के सामने गरूड़ स्तंभ स्थापित कराया था। विदिशा शुंगों की दूसरी राजधानी रही थी। शुंगों के पश्चात् यहां कुछ भागों पर नागवंश के शासक का भी उल्लेख है।

पूर्व गुप्त काल में यहां कुछ समय के लिए शकक्षत्रपी भी स्थापित हुई थी। उज्जैन की शकक्षत्रपी भूमक द्वारा स्थापित की गई थी जिसे क्षहरात वंश के नाम से जाना जाता था। यहां पर शक शासक चष्टन का भी उल्लेख है जिसने नासिक क्षत्रपी से अलग होकर काईमक वंश की स्थापना की थी। काईमक वंश ने उज्जैन में एक लम्बे समय तक शासन किया किन्तु चष्टन वंश का सबसे महान शासक रूद्रदामा हुआ है। जिसने सातवाहन शासक वशिष्ट पुत्र पुलभावी को 2 बार युद्ध में पराजित किया था। वह मुख्य रूप से जूनागढ़ अभिलेख के लिए जाना जाता है जो कि भारत में संस्कृत में लिखा गया पहला अभिलेख है उसने रूद्रदामा नाम के सिक्के भी जारी करवाये थे।

गुप्तकाल में पहले समुद्रगुप्त और फिर चंद्रगुप्त ने शकों को बुरी तरह पराजित किया था। चन्द्रगुप्त–द्वितीय ने तो शक शासक रूद्रसेन–तृतीय को हराकर भारत से शकों का समूल नाश कर दिया था और विक्रमादित्य तथा शकारी उपाधि धारण की थी।

एक जैन ग्रंथ कालकाचार्य के अनुसार विक्रमादित्य नामक शासक द्वारा 57 BC में शको को पराजित कर 'विक्रम संवत' प्रारंभ करने का उल्लेख है इसे मालवसंवंत भी कहा जाता हैं।

गप्तों के पश्चात् उज्जैन पर कुछ समय के लिए हूण शासन का भी उल्लेख है। मालवा मे हूण शासन की स्थापना तोरमाण द्वारा की गई थी और यह मिहिरकूल इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था। लेकिन माना जाता है मिहिरकूल को मंदसौर के शासक यशोधर्मन ने बुरी तरह पराजित किया था। यशोधर्मन ने गुप्तशासक नरसिंहगुप्त बालादित्य के साथ मिलकर मिहिरकूल के खिलाफ एक संघ भी बनाया था। मिहिरकूल कन्नौज के मोखरी शासक ईशानवर्मन से भी पराजित हो गया था।

मन्दसौर अभिलेख – इस अभिलेख की रचना वत्सभट्टी नामक के कवि ने की थी इसे मंदसौर प्रशस्ति के नाम से भी जाना जाता है। वत्सभट्टी के अनुसार हूण काल में गुजरात से 'रेशम बुनकरों' की एक श्रेणी मंदसौर आयी थी जिसने मंदसौर या दशपुर में सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया था। स्कन्दगुप्त के इन्दूर ताम्रपत्र अभिलेख के अनुसार तैलियों की एक श्रेणी जो इंदौर में निवास करती थी वह सूर्य मंदिर एवं महाकाल मंदिर को तल प्रदान करती थी। मंदसौर अभिलेख के अनुसार कुमारगुप्त के राज्यपाल वधुवर्मा ने बाद में सूर्य मंदिर (मंदसौर) का पुर्ननिर्माण भी करवाया था।

नोट – ग्वालियर में स्थित तैली का मंदिर उत्तर भारत में द्रविड शैली में बना एकमात्र मंदिर है। इसका निर्माण प्रतिहार शासक मिहिर भोज द्वारा कराया गया था।

मालवा का परमार वंश

परमार वंश – संस्थापक उपेन्द्र या कृष्णराज माना जाता है कि परमार शासक उपेन्द्र प्रारंभ राष्ट्रकूटों के सामन्त थे और संभवतः 800–818 AD के बीच धारा नगरी में उपेन्द्र कृष्णराज ने इस वंश की स्थापना की थी। यद्यपि उसने स्वतंत्र शासक की तरह व्यवहार नही किया और वह राष्ट्रकूटों के सामन्त के रूप में ही धारा नगरी से शासन करता रहा। उसने अनेक वैदिक यज्ञ सम्पन्न किये थे और जनता को करो में छूट प्रदान को थी। उपेन्द्र कृष्णराज के पश्चात् 818 AD से 945 AD तक क्रमशः बैरीसिंह प्रथम, सीयाक प्रथम, वाक्पति प्रथम और वैरीसिंह द्वितीय ने शासन किया किन्तु सभी की

स्थिति राष्ट्रकूटों के अधीन के शासक की तरह थी और इनकी कोई खास ऐतिहासिक उपलब्धि भी नही हैं।

परमारों की उत्पत्ति को चंदबरदाई द्वारा दिये गये अग्निकुण्ड सिद्धांत से जोड़ा जाता है। एक अन्य कथा के अनुसार विश्वामित्र द्वारा वशिष्ट की कामधेनु गाय चारी कर लिये जाने के पश्चात् वशिष्ट ने उसे पुनः प्राप्त करने के लिए जो यज्ञ किया उसे परमार योद्धाओं की उत्पत्ति हुई परमार का अर्थ–शत्रुओं का नाश करने वाला होता है। परमारों की प्रारंभिक राजधानी उज्जैन थी किन्तु राजा भोज के समय से राजधानी धार हो गई थी।

परमार वंश को जानने के स्त्रोत -

1. **अभिलेखिय साक्ष्य** –

   a) **हार्सोल अभिलेख** – सह अभिलेख सीयाक–द्वितीय का है और इससे परमारों का प्रारंभिक वंशावली ज्ञात होती हैं।

   b) मुंज का उज्जैन अभिलेख

   c) राजा भोज के बांसवाड़ा, बेतमा, कल्वन अभिलेख

   d) कक्षपसाल राजा महिपाल–प्रथम का ग्वालियर का सास–बहू अभिलेख

   e) उदियादित्य का उदयपुर अभिलेख (विदिशा)

   f) लक्ष्मसेन की नागपुर प्रशस्ति आदि

2. **साहित्यक स्त्रोत** –

   a) पद्मगुप्त का नवसहसांकचरित

   b) मेरूतुंग का प्रबंध चिन्तामणी

   c) अबुल फजल की आइने अकबरी

   d) राजा भोज की रचनाएं

   e) अलबरूनी एवं फरिश्ता जैसी मुस्लिमों इतिहासकारों का विवरण

भविष्य पुराण के अनुसार परमारो का प्राचीनतम ज्ञात शासक विक्रमादित्य परमार था। 32 गुणों से युक्त होने के कारण उसे इन्द्र से सिहांसन बत्तीसी उपहार में प्राप्त हुई थी। प्राचीन रचनाओं के अनुसार उसके दरबारी बेताल भट्ट ने विक्रम और बेताल व सिंहासन बत्तीसी नाम के ग्रंथ लिखे थे। यद्यपि इस तथ्य को इतिहास में अतिश्योक्तिपूर्ण माना गया है और चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) के नवरत्न बेताल भट्ट के दिमाग की एक रचना माना गया है। राजा विक्रमादित्य के भाई ही भृर्तहरि थे। जिन्होनें उज्जैन की गुफाओं का निर्माण कराया था। एक अन्य प्राचीन परमार शासक शालिनी वाहन का भी भविष्यपुराण में उल्लेख है लेकिन परमारों की ऐतिहासिकता 9वीं शताब्दी में प्रारंभ होती है जब मालवा क्षेत्र में एक राजपूत वंश के रूप में परमार स्थापित होते हैं।

हर्ष या सीयाक द्वितीय (945–972 AD)

परमारों को राष्ट्रकूटों को स्वतंत्र कराने का पहला प्रयास वैरीसिंह द्वितीय के पुत्र सीयाक द्वितीय द्वारा किया गया। कहा जाता है कि वैरीसिंह द्वितीय के समय गुर्जर प्रतिहारों ने मालवा पर अधिकार कर लिया था और कुछ समय के लिए परमारों को अपना अधीन सामन्त बना लिया था। किन्तु हर्ष ने प्रतिहारों पर आक्रमण कर स्वतंत्र होने का प्रयास किया। वैरीसिंह द्वितीय ने प्रतिहारों द्वारा मालवा से निर्वासित किये जाने के कारण राष्ट्रकूट राजधानी मान्यखेत में शरण ली थी। किन्तु बाद में सीयाक द्वितीय ने राष्ट्रकूट शासक खौट्टिय की हत्या कर परमारों को राष्ट्रकूटों से स्वतंत्र कराने का प्रयास किया। नवसंहसाकचरित नामक किताब में सीयाक द्वितीय द्वारा हूणों को हराने का भी उल्लेख किया गया है। यद्यपि सीयाक द्वितीय चन्देल राजा यशोवर्मन से पराजित हो गया था और इसे नर्मदा नदी के दक्षिण में ही सीमित होना पड़ा था। यशोवर्मन को मालवा परमार के लिए 'काल' कहा गया ह।

सीयाक द्वितीय का प्रारंभ में कोई पुत्र नही था इसलिए उसने मुंज नाम के बालक को गोद लिया था। यद्यपि बाद में उसकी रानी ने सिंधुराज नामक पुत्र को जन्म दिया।

वाक्पति-द्वितीय मुंज (972–990 AD)

मुंज को परमार वंश की स्वतंत्रता का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है। वह सीयाक द्वितीय का दत्तक पुत्र था। उसे उत्पल राज के नाम से भी जाना जाता है। उसने पृथ्वीवल्लभ, वल्लभश्री और अमोघवर्ष जैसी उपाधियां धारण की थी। उसने धार में मुंजसागर तालाब का भी निर्माण कराया था।

अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए कल्चुरी शासक युवराज द्वितीय पर आक्रमण किया और कुछ समय के लिए उनकी राजधानी त्रिपुरी पर अधिकार कर लिया। उसने मेवाड़ के गुहित राजपूत शक्तिसिंह/शक्तिकुमार पर आक्रमण कर उसकी राजधानी अघाट (उदयपुर) पर भी अधिकार कर लिया था। कल्याणी के चालुक्य शासक तैलप द्वितीय ने मुंज पर आक्रमण किया था किन्तु 6 बार ही तैलप द्वितीय मुंज से पराजित हुआ यद्यपि 7वीं बार सेनापति रूद्रादित्य की सलाह को दरकिनार कर मुंज ने चालुक्यों पर आक्रमण किया और पराजित हुआ। कारागार में तैलप द्वितीय की बहन मृणालवती द्वारा धोखा दिये जाने के कारण तैलप द्वितीय द्वारा मुंज की हत्या कर दी गई।

मुंज एक उच्च कोटि का विद्वान था और उसने अपने दरबार में कई विद्वानों और कवियों को संरक्षण भी दिया था। उसके दरबार में नवसहसांकचरित का रचियता पद्मगुप्त, दशरूपक नामक किताब का लेखक धनंजय, दशोरूपावलोक किताब का रचियता 'धानिक', सुभाषितरत्न संदोह का रचियता अमितगति, मृतसंजीवनी (पिंगल छंद) का रचियता हलायुद्ध आदि संरक्षण पाते थे। मुंज की हत्या कल्याणी के चालुक्य शासक तैलप द्वितीय द्वारा कर दी गई थी।

सिंधुराज (990–1010 AD)

मुंज की मृत्यु के पश्चात् उसका छोटा भाई सिंधुराज गद्दी पर बैठा। उसने कुमार नारायण और शहसांक जैसी उपाधियां धारण की थी। उसने अपने भाई मुंज की हत्या का बदला लेने के लिए तैलप–द्वितीय के उत्तराधिकारी चालुक्य नरेश सत्याश्रय पर आक्रमण किया था। पद्मगुप्त द्वारा रचित नवसहशांकचरित सिंधुराज की ही जीवनी है।

राजाभोज (1010–1050 AD)

राजाभोज सिंधुराज का पुत्र और परमार वंश का सबसे महान एवं प्रतापी शासक हुआ है। उसके शासन की सांस्कृतिक एवं राजनैतिक उपलब्धियों की जानकारी के 8 महत्वपूर्ण अभिलेख प्राप्त हुए जिसमें सबसे प्रमुख– विदिशा से प्राप्त उदयपुर अभिलेख है। उदयपुर अभिलेख से उसके द्वारा चेदि, लाट, गुर्जर, चालुक्य, सोलंकी, इन्द्ररत्न आदि के राज्यों पर विजय का उल्लेख हैं।

- **राजाभोज की राजनैतिक उपलब्धियाँ** – राजाभोज को सर्वप्रथम कल्याणी के चालुक्यों से संघर्ष करना पड़ा और उसने प्रारंभ में कल्चुरी राजा गांगयदेव और चोल शासक राजेन्द्र प्रथम की मदद से गोदावरी के आसपास के क्षेत्र को जीत लिया था किन्तु बाद में चालुक्य शासक सोमेश्वर द्वितीय उसकी राजधानी धारा नगरी पर आक्रमण किया और धारा को लूट कर उसमें आग लगा दी थी।
- **लाट, कोंकण और कलार्ट विजय** – कल्वन अभिलेख के अनुसार राजाभोज ने कर्लाट, लाट और कोंकण की विजय भी की थी। भोज ने लाट के राजा कीर्तिराज पर आक्रमण किया, उसे पराजित कर यशोवर्मा को लाट का शासक बनाया था। इसके अलावा उसने कोंकण के सिलाहार राजा को भी पराजित किया था, साथ ही कलार्ट से होकर कोंकण को भी जीता था इसके अलावा उसने इन्द्ररथ नामक शासक को पराजित किया था।
- **चन्देलों से युद्ध** – भोज का समकालीन चन्देल शासक विद्याधर था किन्तु संभवतः भोज विद्याधर से पराजित हो गया था। चंदेल शासकों के अधीन शासन करने वाले ग्वालियर के कछवाहा सामंत महिपाल के ग्वालियर स्थित सास–बहू अभिलेख से यह जानकारी मिलती है कि कछवाहा सामन्त कीर्तिराज ने भोज की सेनाओं को पराजित किया था।
- **चौहानों से संघर्ष** – मालवा के पश्चिमोत्तर भाग में चौहानों से भी राजा भोज का संघर्ष हुआ था, पृथ्वीराज विजय नामक किताब से यह जानकारी मिलती है कि भोज ने चौहान शासक वीर्याराम को पराजित किया था और कुछ समय के लिए उनकी राजधानी शाकंभरी पर अधिकार कर लिया था। भोज ने चौहानों के शासन के अंतर्गत आने

वाले चित्तौड़गढ़ में स्थित त्रिभुवन नारायण मंदिर का भी निर्माण करवाया था हालांकि वीर्याराम के उत्तराधिकारी चामुण्डराज ने कुछ ही समय में शाकंभरी पर पुनः अधिकार कर लिया था।

- ❒ **चालुक्य सोलंकियों से युद्ध** – मैरूतुंग की किताब प्रबंध चिन्तामणी से पता चलता है कि भोज ने सोलंकी शासक भीम–प्रथम पर आक्रमण करने के लिए अपने सेनानायक कुलचंद्र के नेतृत्व में एक बड़ी सेना भेजी थी। कुलचंद्र ने चालुक्यों की राजधानी अन्हिलवाड़ा को जमकर लूटा था।
- ❒ **भोज की पराजय और सत्ता का अंत** – भोज ने चेदि के शासक गांगेयदेव और तेलंगाना के तेलंग शासक की संयुक्त सेनाओं को पराजित किया था किन्तु बाद में गांगेयदेव के पुत्र लक्ष्मीकर्ण और सोलंकी शासक भीम प्रथम ने भोज के विरूद्ध एक संघ बनाया और धारानगरी पर आक्रमण किया। इस आक्रमण के बाद ही भोज को पराजय का सामना करना पड़ा और चिन्ता और बिमारी में भोज की मृत्यु हो गई।

राजाभोज की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

भारतीय इतिहास में राजा भोज को उसकी विद्वता और कला तथा साहित्य के संरक्षक के रूप में अधिक जाना जाता है। उदयपुर अभिलेख के अनुसार राजा भोज ने परमार वंश को वो सब पाया, वो सब दिया, वो सब जाना और सम्पन्न किया जो किसी के द्वारा सम्पन्न नही था। उसने धारा नगरी को अपनी राजधानी बनाया और वहां अनेक महल, मंदिरों का निर्माण कराया, जिसमें भोजशाला का सरस्वती मंदिर सबसे प्रमुख है। उसने भोपाल के दक्षिणपूर्व में 250 मील लंबी एक झील का निर्माण कराया और उसे भोजसर नाम दिया। उसने सरस्वती मंदिर के समीप एक विजयस्तंभ भी बनवाया था और भोजपुर नामक शहर की स्थापना वहा एक शिवमंदिर का निर्माण कराया जिसे पूर्व का सोमनाथ कहा जाता है। चित्तौड़ में उसने त्रिभुवन नारायण मंदिर का निर्माण करवाया था और नागौर क्षेत्र में अनेक सैकड़ो एकड़ भूमि मंदिरों के निर्माण के लिए दान में दी थी।

राजा भोज ने भोजशाला में एक संस्कृत विद्यालय का निर्माण भी करवाया था उसने बद्रीनाथ/केदारनाथ के शिवमंदिरों का भी पुर्ननिर्माण कराया था। राजाभोज विद्वानों का एक महान संरक्षक था अबुल फजल की आइने–अकबरी के अनुसार उसके दरबार में 500 से अधिक विद्वान और पण्डित रहा करते थे। राजाभोज स्वयं एक उच्चकोटि का कवि था उसने कविराज की उपाधि धारण की थी उसकी पत्नि पद्मावती (लीलावती) भी एक उच्चकोटि की विदुषी महिला थी। कहा जाता है कि साहित्य की विभिन्न विधाओं पर राजा भोज ने 84 से अधिक ग्रंथों की रचना की। यद्यपि 21 ग्रंथ ही ज्ञात हो सके है जिनमें प्रमुख है –

1. भोज प्रबंधम – यह राजाभोज की आत्मकथा है।
2. युक्तिकल्पतरू – यह ग्रंथ राजनीतिशास्त्र, शिल्पशास्त्र, वास्तुशास्त्र, पशुपरीक्षा, विज्ञान एवं तकनीकि
3. राजमृगांक
4. व्यवहार समुच्चय
5. सरस्वती कंठाभरण
6. तत्व प्रकाश (शिवपूजा पर)

विद्याविनोद, राजमार्तण्ड, चंपू रामायण, अयुर्वेद सर्वश्व, कोदण्डराम काव्य, अवनि कुमार, सिद्धार्थ संग्रह, चारूचर्चा, शब्दानुशासन, व्यवहारमंजरी, आदित्य प्रताप सिद्धांत, नाममालिका आदि।

उदयपुर प्रशस्ति में राजा भोज के लिए 'कविराज' की उपाधि प्रदान की गई है। राजा भोज के दरबार में भास्करभट्ट, उबट, धनपाल और दामोदर मिश्र जैसे विद्वान और कवि आश्रय पाते थे। कवि उबट ने वैदिक साहित्य पर मंत्रभास्य नाम की टीका भी लिखी थी। राजाभोज की मृत्यु के पश्चात् यह कहावत प्रचलित हो गई कि आज सरस्वती निराश्रित हो गई है।

नोट – 1. राजा भोज के सम्मान में भोपाल के बड़े तालाब में 32 फिट ऊँची राजा भोज की एक प्रतिमा भी स्थापित की गई है।

2. साथ ही भोपाल हवाई अड्डे का नाम राजा भोज हवाई अड्डा रखा।

Copyright © - Shri Vedanta Civil Services Academy

परवर्ती परमार शासक और परमार सत्ता का अंत

भोज की मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारियों ने लगभग 1210 ई. तक स्वतंत्र शसन किया किन्तु इतिहास में इसका महत्वपूर्ण योगदान नहीं है। भोज की मृत्यु के पश्चात् उसक पुत्र जयसिंह–I (1060–70) गद्दी पर बैठा किन्तु कल्चुरी शासक लक्ष्यिकर्ण और चालुक्य सौलंकी भीम ने धारा नगरी पर अधिकार कर लिया था इसके पश्चात् कल्याणी के शासक सोमेश्वर–II धारा नगरी पर आक्रमण किया था। जयसिंह पराजित हुआ और मार डाला गया।

जयसिंह के पश्चात् उदयादित्य नामक परमार शासक का उल्लेख है उसन चौहान शासक विग्रह राज की मदद से एक बार पुन: धार पर अधिकार कर लिया और लक्ष्यिकर्ण को पराजित किया था। उसने ध्वस्त हो चुकी धारा नगरी को पुर्ननिर्मित कराया था। उसने विदिशा के पास उदयपुर नामक ग्राम बसाया था और वहा पर नीलकंठेश्वर मन्दिर का निर्माण कराया था।

उदयादित्य के पश्चात् उसका बड़ा पुत्र लक्ष्मसेन शासक बना सम्भवत: उसका नागपुर के कुछ क्षेत्रों पर अधिकार हो गया था। और उसने बंगाल और बिहार के स्थानीय राजाओं पर भी आक्रमण किया था। नागपुर प्रशस्ति से उसकी उपलब्धियों की जानकारी मिलती है।

लक्ष्यदेव / लक्ष्यसेन के पश्चात् उसका छोटा भाई नरवर्मा शासक बना। उसने अनेक मन्दिरों और तालाबों का निर्माण करवाया था। था निर्वाणनारायण को उपाधि धारण की थी। उसे चौहान शासक अजयराज और अर्णोराज ने पराजित किया था।

नरवर्मा का उत्तराधिकारी उसका पुत्र यशोवर्मा हुआ। उसके समय में ही मालवा का क्षेत्र परमारों के हाथों से निकलने लगा। चन्देल शासक मदनवर्मा ने विदिशा के क्षेत्र पर अधिकार कर लिया चौलुक्य सौलंकी शासक जयसिंह सिद्धराज ने मालवा पर आक्रमण कर यशोवर्मा को बन्दी बना लिया और मालवा पर अधिकार कर अवन्तिनाथ की उपाधि धारण की। इसके बाद तो अर्जुनवर्मा, देवपाल और जयवर्मा जैसे छोटे–छोटे स्थानीय शासकों के रूप में ही परमारों ने शासन किया। बाद में परमारों की शाखाएँ धार, चन्द्रावती (माउण्टआबू), बागौर, बासवाड़ा, ज्वालिपुर (जालौर राजस्थान) एवं किराडू (बाड़मेर राजस्थान) आदि में विभाजित हो गई। लेकिन इनमें उज्जैन और धार प्रभावी माने गये है। 1305 में यहां के स्थानीय शासक महलक देव थे जिन पर अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति **आईन–उल–मुल्क मुल्तानी** ने आक्रमण किया था और मालवा को जोतकर सल्तनत में मिला लिया था। मुल्तानी को यह का पहला मुस्लिम सुबेदार बनाया गया था। कहा जाता है कि मोहम्मद बिन तुगलक के समय यहा का सुबेदार दिलावर खाँ ने भोजशाला के संस्कृत मन्दिर के समिप एक मस्जिद का निर्माण कराया था।

नोट– बुरहानउद्दीन गरीब सूफी संत को उत्तर स दक्षिण भारत ले गये, इन्ही के नाम पर मलिककाफूर ने बुरहानपुर शहर की स्थापना की।

***मजार**– दौलताबाद (औरंगाबाद)– औरंगजेब को मृत्यु के बाद दौलताबाद में दफनाया गया।*

मालवा में स्वतंत्र मुस्लिम शासन की स्थापना का कारण 1398 ई. में सल्तन पर तैमूर लंग का आक्रमण और इसके कारण सल्तनत का कमजोर होना था। इसी स्थिति का फायदा उठाकर मालवा के सुबेदार दिलावर खाँ ६ हुसैन खाँ गौरी ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया और 1400 के आस पास मालवा में स्वतंत्र मुस्लिम शासन की नींव रखी। यद्यपि उसने स्वयं को शासक घोषित नहीं किया।

अलप खाँ होशंगशाह (1406-1435 ई.)

दिलावर खाँ के पुत्र अलप खाँ ने स्वयं को स्वतंत्र शासक घोषित की और होशंगशाह की उपाधि धारण की। 1407 में गुजरात के शासक मुज्जफर शाह ने मालवा पर आक्रमण किया और होशंगशाह को पकड़कर गुजरात ले गया, लेकिन होशंगशाह ने मुक्त होकर धार के स्थान पर माण्डू को अपनी राजधानी बनाया था। उसे माण्डू शहर **(City of Joy आनन्द की नगरी)** का संस्थापक कहा जाता है। वह प्रसिद्ध सूफी संत बुरहानउद्दीन गरीब का शिष्य था। होशंगशाह ने व्यापार को प्रोत्साहन देने के लिये जैन व्यापारियों की काफी मदद की थी। उसने होशंगाबाद नाम का शहर भी बसाया था। होशंगशाह ने माण्डव के प्रसिद्ध हिण्डोला महल का भी निर्माण करवाया था। और माण्डू में

होशंगशाह के मकबरे का निर्माण भी प्रारम्भ कराया था। यद्यपि इस मकबरे का पूर्ण निर्माण महमूद खिलजी के काल में हुआ था। उसने यह मकबरा पूर्ण संगमर से बना भारत का पहला मकबरा है और इसे ताजमहल का पूर्वगामी भी कहा जाता है।

होशंगशाह न माण्डू के किले का निर्माण भी प्रारम्भ कराया था। यद्यपि इसे बाजबहादुर ने पूर्ण कराया था। इसी प्रकार होशंगशाह ने माण्डव के प्रसिद्ध अशर्फी महल (मदरसा) का भी निर्माण कराया था।

मोहम्मदशाह गौरी (1435–1436)

होशंगशाह का पुत्र गजनी खाँ उसकी मृत्यु के पश्चात् मोहम्मदशाह गौरी की उपाधि के साथ गद्दी पर बैठा किन्तु वह एक अयोग्य और निरंकुश शासक था, वह दिन भर शराब में डूबा रहता था। और उसने शासन की पूरी बागडोर अपने साले महमूद खाँ को सोप रखी थी। महमूद खाँ अपने पिता मलिक मुगीथ के साथ षडयंत्र रचने लगा और इससे परेशान होकर मोहम्मद खाँ ने स्वयं ही गद्दी छोड़ दी और मालवा के गौरी वंश का अंत हो गया।

संस्थापक- महमूद शाह-I खिलजी (1436–1469)

महमूदशाह खिलजी 14 मई 1436 को मालवा की गद्दी पर बैठा और वह मध्यकालीन मालवा का सबसे शक्तिशाली प्रतापी शासक माना जाता है। उसने अपने खास अमीर मुस्तिहर–अल–मुल्क को अपना वजीर नियुक्त किया था और अपने पिता मुगीर खाँ को 'आजय हुमायूँ ' की उपाधि प्रदान की थी। कहा जाता है कि महमूद खाँ प्रथम ने अपने साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार किया। और उसके समय में मालवा पूर्व में बुन्देलखण्ड पश्चिम मे गुजरात, उत्तर में बूंदी, गाँगरोन, अजमेर, रणथम्भौर दक्षिण में सतपूड़ा श्रेणी और बरार तक विस्तृत हो गया था। मध्यकालीन इतिहासकार फरिस्ता के अनुसार– ऐसा कोई वर्ष नहीं था जब महमूद ने युद्ध न किया हो, उसका सेनिक शिविर उसका घर बन गया था और युद्ध का मैदान उसकी आरामगह। उसने गुजरात के अहमदशाह प्रथम बहमनी के शासक मुहम्मदशाह–III एवं मेवाड़ के राणा कुम्भा के साथ युद्ध किये थे। माना जाता है कि राणा कुम्भा ने महमूद को पराजित कर चित्तौड़ में विजय। कीर्ति स्तम्भ का निर्माण कराया था। किन्तु महमूद के इतिहासकारों के अनुसार इस युद्ध में महमूद विजयी हुआ और उसने माण्डव में। 7 मंजिला विजय स्तम्भ बनवाया था। महमूद ने हाथी प्राप्त करने के लिये सरगुजा, रायपुर और रतनपुर..रतनगढ़ के क्षेत्रीय राजाओं पर भी आक्रमण किया था। सरगुजा के राजा भोज ने तो उससे मित्रता स्थापित कर उसे भारी संख्या में हाथी प्रदान किये थे।

महमूद खिलजी ने मालवा में शिक्षा और साहित्यक गतिविधियों को भी संरक्षण दिया उसने माण्डू में एक भव्य मदरसे का निर्माण कराया था। इसके अलावा धार, उज्जैन, सारंगपुर, देपालपुर, चन्देरी, होशंगाबाद, रायसेन आदि स्थानों पर भी मदरसे स्थापित किये उसने जोनपुर के शीहाब हाकिम को भी अपने दरबार में आमंत्रित किया जिससे **"मआसिर – ए – मेहमूदशाही"** नामक किताब लिखी थी। महमूद के संरक्षण में ही चित्रकला की किताब **"जैन कल्पसूत्र"** संकलित की गयी थी। उसने माण्डव में एक सार्वजनिक चिकित्सालय की भी स्थापना की थी। जिससे प्रजा का नि:शुल्क उपकार किया जाता था। कहा जाता है कि उसके कार्यों की प्रसिद्धी इतनी व्यापक थी कि मिस्त्र के अब्बासी खलिफा ने 1468 में उसने **"सुल्तान"** की पदवी एवं खिल्लत प्रदान की थी। उसके दरबार में मिश्र के सुल्तान अबू सईद । सैय्यद ने भी अपना एक प्रतिनिधि मण्डल भेजा था। होशंगशाह की भाँति महमूद ने भी अपने राज्य में जैन पूंजी पतियों को प्रोत्साहित किया था।

स्थापत्य – महमूद ने अपने समय में अनेक भव्य ईमारतों, मन्दिरो, महलो तथा मस्जिदों का निर्माण कराया था। उसने माण्डव में होशंगशाह के मकबरे के पूर्ण कराया, और माण्डव में प्रसिद्ध जामी मस्जिद का निर्माण कराया था। उसने गागरोन (राजस्थान) में मुस्तफाबाद नामक शहर बसाया था। और चन्देरी में कुशक महल (सात मंजिला) भवन का निर्माण कराया था। महमूद खिलजी की मृत्यु के पश्चात् वंश बिखर सा गया था।

गियाथशाह 'ग्यासुद्दीन शाह' (1469.1500 तक)

ग्यासुद्दीन खिलजी महमूद का सबसे बड़ा पूत्र था। और वह 3 जून 1469 में मालवा के राजसिंहासन पर बैठा। किन्तु उसके समय में गुजरात के सुल्तान महमूद बैगड़ा ने चपानेर पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया था। उसने 2 बार चित्तोड़ पर भी आक्रमण किये किन्तु पराजित हुआ। वह काफी धार्मिक प्रवृत्ति का था उसने अनेक धार्मिक अनुदान भी प्रदान किये थे। उसने अपने पुत्र नारूद्दीन को शासन का पूरा भार सौंप रखा था।

कहा जाता है कि उसके पुत्र ने ही जहर देकर उसकी हत्या कर दी थी। इतिहासकारों के अनुसार उसने अपने लिये जहाजमहल नाम से एक हरज का भी निर्माण कराया था जिसमें 16000 से अधिक स्त्रियाँ थी।

नासिरूद्दीन शाह नासिर शाह (1500–1510)

नासिरउद्दीन का वास्तविक नाम अब्दुल कादिर था और अपने पिता ग्यासुद्दीन की मृत्यु के पश्चात् वह अबुल मुज्जफर नासिर की उपाधि के साथ मालवा का सुल्तान बना। वह एक क्रूर और निर्दय स्वभाव का था। उसने अपने एक पुत्र शिहाबुद्दीन को विद्रोह के आरोप में पराजित किया था किन्तु उसे छोड़ दिया और अपने छोटे पुत्र आजम हूमायूँ को अपना उत्तराधिकारी मनोनित किया था।

आजम हुमायूँ को उसने महमूद शाह–II की उपाधि दी थी। नासिरशाह की मृत्यु उज्जैन के कलियादेह महल के तालाब में फिसलने के कारण हो गई थी। नासिरूद्दीन के द्वारा माण्डू में बनाये गये महल ही बाद में बाजबहादुर तथा रानी रूपमती का महल नाम से प्रसिद्ध हुये।

महमूद शाह खिलजी-II (1510–1531 AD)

इसने वहिष्तपुर में अपना राज्याभिषेक कराया लेकिन इसके काल में मालवा में छोटे–छोटे राजपूत शासकों का उत्कर्ष प्रारम्भ हुआ। वसन्तराय इसका वजीर था। कहा जाता है कि महमूद के समय में ही मालवा की राजनीति में मैदनीराय का उदय हुआ और मैदनीराय को मालवा का King maker भी कहा जाता है। मैदिनीराय ने ही महमूद–II को राजगद्दी से होने वाले षड़यंत्रों स बचाया था। इसलिए महमूद–II ने उसे वजीर का पद प्रदान किया था, किन्तु 1531 ई. में गुजरात के शासक बहादुरशाह प्रथम थे मालवा पर आक्रमण कर उसे जीतकर गुजरात में मिला लिया था और मालवा का स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हो गया। किन्तु 1535 में हुमायू ने जब गुजरात विजय को तो मालवा मुगल सल्तनत का भाग बन गया।

1535–1542 ई. तक यह कादिर खाँ या मल्लू खाँ नामक शासक का शासन रहा, किन्तु 1542 में शेरशाह सूरी ने मालवा अभियान कर मल्लू खाँ को पराजित कर दिया और सुजात खाँ को मालवा का गर्वनर नियुक्त कर दिया।

1555 में राजनैतिक अव्यवस्था का लाभ उठाकर बाजबहादुर नामक शासक ने मालवा में पुन.. स्वतंत्र मुस्लिम राज्य की स्थापना की बाजबहादुर और उसकी पत्नि रानी रूपमती संगीत प्रेमी थे। 1561–62 मालवा की समृद्धि के कारण अकबर के आदेश पर सेनापति आदम खाँ, पीर मोहम्मद, अत्गा खाँ ने मालवा पर आक्रमण किया और मालवा को जीतकर मुगल साम्राज्य का एक सूबा बना दिया गया। पीर मोहम्मद पहला मालवा का मुगल सुबेदार बना। किन्तु 1728 में बाजीराव–II के आदेश पर चिम्नाजी अप्पा ने अमझेरा (धार) के युद्ध में मुगल सुबेदार व गिरधर बहादुर और हिम्मद बहादुर की हत्या कर दी। और 1731 के मराठा इकरार नामा के तहत यह क्षेत्र मल्हारराव होल्कर को प्रदान किया और होल्कर वंश की नींव रखी।